

बिना राम के तू किसी नाल प्यार न करी,
ओ मना याद रखी,
सोना छड़ के तू मिट्टी दा व्यापार ना करी, ओ

कोई मंदा बोल बोले, अगो बोली ना, हाँ बोली ना
देखी बंदा होके गंदगी फरोली न, हाँ फरोली ना
कोड़ी तकदीर नाल तकरार ना करी, ओ मना याद रखी

जे तू नेडे जाना चाहे भगवान दे, हाँ भगवान दे,
पेजा पैरियां नू नेडे वी ना आन दे, हाँ ना आन दे
काम, क्रोध, लोभ, मोह ते अहं न करी, ओ मना

मुड़ के चौरासियां दे खाई ना, हो खाई ना,
यही वेला है सुनहरा चुक गई ना, हा चुक जाई ना,
देखी अपने उद्धार दा उधार न करीं ओ मना



हे गोपाल राधा कृष्ण गोविंद-२ कृष्णा गोविंद-२
हे

तु बंसी बजाओ, नचाओ मुझे
पग घुंघरू न बाधू ये मुमकिन नहीं,
आग तुमने लगाई मिलन की हरि..
बिना तेरे बुझाए ये तो मुमकिन नहीं
रंग दिया मुझे अपने रंग में मुझे सांवरे,
रंग ढूँगा चढे, ये तो मुमकिन नहीं
वागवा तुम मेरे,, मैं तुम्हारी कली
फिर भी मैं न खिलूँ ये तो मुमकिन नहीं-२,
हे

तुम्हें दे दूँ और दिल भी संभाले रहूँ
ऐसा कर पाउंगी ये तो मुमकिन नहीं
फिर भी चिल्तवन से तुम मुझको धायल करो,
मैं खुद को बचा लूँ ये मुमकिन नहीं,
सामने तु रहो, मैं निहारूँ तुम्हें, फिर भी प्यासी रहूँ
ये मुमकिन नहीं,
तुग नैना से नैना मिलाये रहो
मैं पलके गिरा दूँ ये मुमकिन नहीं
हे गोपाल

तुम दिलबर मेरे, मैं दीवानी तेरी,
जान तुम पर न वारूं ये मुमकिन नहीं
मिल जाए तेरा दर तो मैं सजदा करूं
सर दर से उठा लूं, ये मुमकिन नहीं,
कृपा क्या ये कम है ओ सतगुरु मेरे,
जो चरणों मे तेरे ठिकाना मिला
बड़े भाग्यशाली हैं वो तेरे बंदे,
जिन्हें आपसा आशियाना मिला है
हे गोपाल

आपके दर पे रख के उठाउ जो सर,
ये इबादत को मेरी नराना मिला है
ओ मुरिद मैं रहमत के सदके नुम्हारी,
जो चरणों में सर को झुकाना मिला है,
मेरी हालत पे सतगुरु कर्म है किया,
जो चरणों में तेरे ठिकाना मिला है
वो क्या जनन की परवाह करेंगे
जिन्हें आपका आशियाना मिला है—२
हे गोपाल



इक मेरे शाम दे बिना, सारी दुनिया बेगानी है,
दुनिया वाले क्या जाने, साड़ी प्रीत पुरानी है।

दिल साडा ले ही गया, हारां वाला सांवरियां
ओदा बी कसूर नहीं, ओटी रीत पुरानी है
इक मेरे

दिल साडा जख्मी होया, लोकी कैन्दे इलाज करे
मैं कैया रैन दयो—२, मेरे यार दी निशानी है
इक मेरे

शाम सिर मुकुट सोहे, हथ जोड़ी कंगना दी—२
दिल करे बंखदी रवां, ओटी सूरत नूरानी है
इक मेरे

मेरे दिल मे आ जाओ, मेरे दिलदार बनो—२
दिल जान वार देवेंगे, असां दिल विच ठानी है
इक मेरे



इक नशा तन मन में छाया है
जबसे प्रभु प्यार तेरा पाया है

कोई हमदर्द, हमराज नहीं था जग में,
कोई हमदम, कोई सरताज नहीं था जग में
अब तो रहमत की तेरी छाया है, जब से प्रभु

जो भी देखे तुझे इक बार मग्न हो जाये
जो था वीरान वो गुलजार चमन हो जाये
प्रेम का मेघ उमड़ आया है
मीठी—२ फुहार लाया है, जब से प्रभु.....

तेरी मर्जी हो तो कतरे को समुंदर करदे
मांगने वाले को इक पल में सिंकंदर करदे
सबसे अनमोल तेरा साया है, जब से प्रभु....

आपके नूर से इक चीज भी खाली न रही
जश्ने बेदाग हुआ, रात भी काली ना रही
नूर सैलाब हो—२, नूर सैलाव उमड़ आया है।
जब से प्रभु.....



इस जन्म का सही सारांश है
तू तो शिवा शिव है—२ तू तो शिवांश है

वो मेरा है, ये तेरा है
इस मिथ्या ने मन को धेरा है
इस सत्य को तू जान ले, पहचान ले
तू तो शिवा शिव है, तू तो शिवांश है

प्रश्न भी तू और उत्तर भी तू है
पवन में खुशबु को किसने रोका है
इस सत्य को तू जान ले, पहचान ले
तू तो शिवा शिव है, तू तो शिवांश है

जीवन बस इक सपना है
जब तन को माटी होना है
इस सत्य को तू जान ले, पहचान ले
तू तो शिवा शिव है, तू तो शिवांश है



ऐ मेरे प्यारे गुरु, जन्मों से बिछड़े गुरु
तुझ पे मैं कुर्बान,
तू ही मेरी जिंदगी, तू ही मेरी बंदगी
तू ही मेरी जान

गुरु के आंचल से जा आये
उन हवाओं को सलाम
गुरु के मुख से निकली वाणी को
मेरा शत शत प्रणाम
जितनी प्यारी याद तेरी, उतना प्यारा तेरा नाम
मैंने मांगी तुझसे खुशियां
तूने दिया आत्म आनन्द
मैंने सुनाया रोग अपना
तूने मुझे निर्मल किया
द्वेष अब किससे करूँ, सब जगह है तेरा धाम ऐ
ज्ञान का दीपक सदा,
मन मेरे जलता रहे
एक इच्छा ना रहे,
ये भावना बढ़ती रहे,
और तो कुछ भी नहीं, बस रह गया है तेरा प्यार ऐ

८



ऐसा जाम पिला मेरे सतगुर
रहे न जग की लोड
थोड़ी जई होर पिला दे होर

प्रेम प्याला मीरा पीता, प्याले विचो दर्शन किता,
दर्शन करके मीरा कहंदी, जय जय नंद किशोर

प्रेम प्याला धने पीता, गत्थरा विचो दर्शन किता
साग रोटी खवा के कहंदा, चल खेंता दी ओर ...

प्रेम प्याला भीलनी पीता, बेरां विचो दर्शन किता
झृठे बेर खुआ के कहंदी, राम मेरे हैं कोल ...

अजे वी होश है मैनु बाकी थोड़ी जई होर पिला दे
प्रभु तेरे विच दौड़ी आवा, रहे ना जग की लोड

प्रेम प्याला मैं वी पीता, बांसुरी विचो दर्शन किता
बांसुरी की आवाज सुनके, मैं अंदरो ही दर्शन कीता



ओ रहमत के दाना तू बकशीश करता जा
मांगू दुआ मैं — २

सहारा देता जा, शरण में लेता जा, मांगू दुआ मैं, मांगू दुआ
तेरे चरण कमल में डाल रहूँ डेरा—२
तेरी एक झालक को तरसे मन मेरा—२
यह बढ़ती प्यास रहे, तुम्हीं से आस रहे.
मांगू दुआ मैं—२

श्वासों की माला, जपे नाम तुम्हारा
कभी डोल न पाये, विश्वास हमारा
ओ करते बंदगी, ये बीते जिंदगी
मांगू दुआ मैं—२

वो कर्म करूँ मैं, जो तुझको भाये—२
जीवन जगत ये, तेरे लेखे लग जाये—२
ये दामन छूटे ना, ये बंधन छूटे ना—२
मांगू दुआ मैं—२



वे मैं सदके ललारिया जावां,
चुन्नी नूं रंग देन वाल्या,
वे मैं जिन्दगी नूं घोल घुमावां, चुन्नी नूं रंग—
वे—

जिनी राही मेरा आया ललारी
उनां राहां तो मैं सदके वारी
वे मैं अखियां दा फर्श विछावां, चुन्नी नू—

ऐ ललारी मेरा सब तो निराला
ज्ञान दा रंग चढ़ावन वाला
नी मैं तन—मन ज्ञान विच रंगावां, चुन्नी—

ऐसी सतगुरु ने चुन्नी रंगाई
तार—२ विच होई रोशनाई
बी मैं रीझा दे नाल हड़ावा, चुन्नी—

पर उपकारी मेरे सतगुरु आये
पर उपकारी मेरे ललारी आये
दर्शन कर तन—मन हपायि
जी करदा मैं तकदी जावां, चुन्नी नू—
वे मैं सदके — मैं उठके ना जावां



मेरे साहिब,—२ तू, मैं माण निमाणी
अरदास करी प्रभु अपने आगे—२
सुन—२ जीवां तेरी वाणी ए, मेरे साहिब——४

तुद चित्त आवे, महा आनंदा—२
जिस बिसरे सों मर जाई—२
दयाल होवे जिस उपर करते—२
सो तुद सदा ध्याई —२ मेरे साहिब ——४

चरण धूङ तेरे जन की होवां—२
तेरे दर्शन को बल जाई—२
अमृत वचन हृदय उर धारी —२
लौ कृपा ते रांग पाई—२ मेरे साहिब ——४

अंतर की गत तुद पै सारी
तुद जे बड अवर न कोई
जिसनू लाये, लछे सो लागे
भगत तुम्हारा सोई—२ मेरे साहिब ——४

दुई कर जोड़ गांगू इक दाना—२
साहिब तुढे पावां आ—२
श्वांस—२ नानक आगधे—२, आठ पहर गुण गावां
मेरे साहिब ——



मन मेरो गज, जिव्हा मेरी काती
मप—२ काटो, जम की फांसी—२

काह करूं जाति, काह करूं पाति,
राम का नाम, जपुं दिन राति,
मन मेरो——

रांगन रांगू, सीवन सीउं
राम के नाम विन, घड़िया न जीउ,
मन मेरो——

भगती करूं, हरि के गुण गाउं,
आठ पहर, अपना खसम ध्याउं,
मन मेरो——

सोने की सूई रूपये का धागा
नामे का चित्त, हर स्यों लागा,
मन मेरो——



मेरी हीरिये फक्तीरिये नी सोनिये
तेरी खुशबू नशीली मन मोहनिये,

याद आवे तेरी, जदो देखा चंद मैं
तू ही दिसे जदो, अखा कगं वंद मैं
मैनू लगे राधा तू ते लाल नंद मैं
काश तेनू वी होवां ऐदा पसंद मैं
कदो नींद तो जगाया नी परोनिये, तेरी—

देख गल तेरी करदे ने तारे वी
नाले मेरे वल करदे ने इशारे नी,
ऐही यार गेरे ऐही ने सहारे वी,
पर चंगे तेरे लगदे नहीं लारे वी,
सानू राहां च ना रोल, लारे लोनिये, तेरी—

केढ़ा पाया ऐ प्यार वाला जाल नी
जिथे जावां तेरी याद जांदी नाल नी
ऐं तां रोग मैं अवला ल्या पाल नी
शाम पैदे ऐ देंदा दीवे बाल नी
ए कि किता वेख दिल दा तू हाल नी
मेरे मन अरजोई आग लोनिये, तेरी खुशबू—

मैं तां चिड़ियां नू पुछां कुज बोलो नी,
कदो आओ गेरी हीर भेद खोलो नी,
तुसी जाओ, सच्ची जाओ, ओनो टोलो नी,
जाके फुलां वाला वाग फरोलो नी,
ओ गुलाब दिया पन्तियां च होनी ऐ, तेरी—
पहले भोले बन चैन तू चुरा लिया
फिर निंद नू ख्वाबां दे लेखे ला लिया,
साढ़ा दुनिया तो साथ वी छुड़ा लिया,
फिर झालक जी देके मुंह घुमां लिया,
किंवे पुनां जजवात साढे पोणिये, तेरी—

ऐ दिल जो गांदा ऐ ऐनू गान दे
ऐ तां हो गया शुद्याई रोला पान दे
बस प्यार वाल छतीर तू तान दे,
बाकी रब जो करेदा करी जान दे,
मैनू दिल च वसा ले पतोनिये, तेरी—



नी मैं तेरे रंग रंगया, राङ्जन यार, ओ राङ्जन यार—

मिट्टी दा इक बुत बनाया, फेर विच बड बैठा आये—२
आपे धीयां, आपे पुत्र, ते आपे बनया मां पे,
ओ—

जिथे—किथे तू है रहदा, हर दिल विच तू है वैदा—२
तेरी गोदी ही होंदी, न कुछ न कुछ कहंदा
ओ—

तेरी गली विच दो न समाये, मैं रह पावां या तू रह जावे—२
तेरे रंग विच ऐसी रंगी, भुल गई खुद नू तू ही भाये
ओ—

तेरी याद विच खोंदी जावां, न तू रह पाया, न मैं रह जावां
गुमसुम इक महल दे अंदर, ऐसी गृद्धी नींद सो जावां—२

ओ राङ्जन —

ॐ

९८

बहुत जन्म विछड़े थे माधो
एह जन्म तुम्हारे लेखे—२

हम सर दीन, दयाल न तुम सर
अब पतियार क्या कीजै, ——२
बहुत—————

बचनी लोर, गोर मन माने
जन को पूरन कीजै, ——२
बहुत—————

हउ बलि जाउं, रमैयया कारने
कारण कवल अबोल, ——२
बहुत—————

कहे रविदास आस लग जीवों
चिर भयो दर्शन देखे ——२
बहुत—————

ॐ

ये कैसी कसक तूने, मेरे दिल में जगा दी है,
सोचा था प्यास बुझे, तूने और बढ़ा दी है,
सतगुरु को मुहब्बत है, लेकिन वो छृपाते हैं—२
ये बात मुझे उनकी नजरों ने बता दी है —(स०)
ये कैसी —————

मैखाने क्यों जाये, हम पीकर क्यों जायें
मेरे सत० प्यारे ने, नजरों से पिला दी है
ये कैसी —————

तकदीर बदलने का, ये ढंग ही निराला है
मेरे मीत, मेरे सजना, तूने रुह जो खिला दी है,
ये कैसी —————

तेरी वाणी सुनने का, मेरा दिल जो तरसता है
ये प्रीत भी क्या दाता, तूने बना दी है
ये कैसी —————

जब नजर मिली मेरी, मदहोश हुआ मैं तो
अब तक न संभल पाया, तूने इतनी पिला दी है,
ये कैसी —————

ॐ

लगियां ने मौजां, हुन लाई रखी, दातया
प्रीत अपनी नृं वधाई रखीं दातया

जदों दा मैं चरणां दा बनया गुलाम हां
सारे कैन्दे खास मैं, आमों का भी आम हां
पर्दा जो पाया ही ते, पाई रखीं दातया

नाम तेरा लैके चन्ना पहचान पाई ए
तेरे हथ डोर ते आपे तू चढ़ाई ए
चड़ी हुई गुडडी नृं चढ़ाई रखी दातया—२
प्रीत अपनी नृं —————

किसे नृं मैं अपना दुखड़ा सुनाया नहीं,
तेरे बाजो किसे मैनृं सीने नाल लाया नहीं,
लाया ही जो सीने नाल, लाई रखी दातया
प्रीत अपनी —————
लगियां ने मौजा —————

ॐ

सुना है एक सौदागर आया, वेचे सुंदर लाल सखी
घर—२ जा वो अलख जगावे, खुद है लालो लाल सखी

जो कोई लाल अमोलक चाहे
ले जावे ततकाल सखी
मैं भी लाल खरीद के लाउं
आया मन में छ्याल सखी — सुना —————

झट ही उसने यह कह दीना
यह है महंगा माल सखी
इसकी कीमत दे न सके
तू झृठा करे सवाल सखी — सुना —————

तुझ को कदर न लाल की प्यारी,
कितने बीते साल सखी,
सीस उसनों भेट चढ़ावे,
तब पावे यह लाल सखी, — सुना —————

वात सुन मैंने सौंदा किया,
मैं तो भया निहाल सखी,
प्रेमानंद जो सिर देने से,
मिले तो सस्ता जान सखी, — सुना —————

ॐ

इबादत कर, इबादत करन दे नल गल बनदी ए
किसी दी अज बनदी ए, किसी दी कल बनदी ए

उंची सोच सिर नीवा, यार तू क्यों
ओ ये सागर जिन्हा गहरा, उन्हीं ही छल लगदी ए
इबादत ——————

जो अहं करदा हे, वे इक दिन खाक हो जाना
तेरे तो जानवर चंगे, जिन्हां दी खल बन दी ऐ
इबादत ——————

के पीतल ओ वी है जिसदो हथियार बनदे ने
पर वो असल पितल, जो मंदिर दा ढल बनदी ए,
इबादत ——————

जे कर मुश्किलां आवन, तेरे रस्ते, तू डोली ना,
के मुसीबत ही दुखां दा हल बनदी ए,
इबादत ——————

इक वारी दिल नाल तू अरदास तां कर वे
के देखी फेर तेरी, गल उसी पल बनदी ए
इबादत ——————

इन्हा रस्तयां तेनू सतिंदरा पार नहीं लाना
ओही पगड़ंडी फड़ जेड़ी गुरां दे घर जांदी ए
इबादत ——————

ॐ

— प्रीतम मतवाले हो...., भगता दी आत्मा दे,
तुसी रखवाले हो।
— बस रूप वटाया ऐ... सजना,
गोंविद गोकूल दा, सतगुर बन आया ऐ।
— मेरे मीत मेरे सजना, हाणियां
विनती करां ऐहो(२) हर श्वांस विच तुसी वसना..२
— कुछ ऐसा कर जावां माहिया,, .२
— मेरेया साहिबा दे, चरणां च ही मर जावां . २
— बस इश्क तेग ही रहिये
नजरां तू ही रहे, रूह मेरी ऐहो कहे
— जन्नत सानू मिल गई ए, माहिया.
— तेनू पाके मेरे साहिबा, रूह मेरी खिल गई ए....
— तेरी प्रीत प्यारी ऐ,
तेरे उतो मेरे हाणियां, रूह जांदी वारी ऐ...
— ऐ रहमत तेरी ऐ सजना ..
— पीड़ मेरी तेरे इश्क दी, जागीर ऐ तेरी ऐ...
— तुसी प्रीतम प्यारे हो..
— हुण असी तैनू दसदे हां . रूहां दे लशकारे हो
— तेरी प्रीत दे मारे हां
— मेरे बड़े साहिबा वे — तेरी अख दे तारे हां...
— दो तारां लिशकदियां राङ्गना
— तेरी मैं नब्ज देखी — तेनू मर्जा इश्क दियां सजनां...
— दीवा बलदा बनेरे ते हाणियां
— तेरी गली मैं फिरदा, वे मैं आशिक तेरे रे ते
— पींगा प्यार दियां पावांगे (प्रीतम)
— हुण असी मिल गयेआं, गीत प्रेम दे गावां गे....
— तेरे नाल ही बोलांगे.
— इकवारी सामने तां वे, दुख जुदाइयां वाले खोलेंगे...

- प्रेमी जो मिलदे ने
 गुरां दे प्यार अंदर, फुलां वागृ खिलदे ने ...
 - ऐ बीमारी पुरानी ए.२
 सजना वे तक—२ के, चढ़ी नाम खुमारी ए ...
 - यादां सांभ—२ रखिया ने, इक तेरे दर्शन विना
 साढ़ी रोंदिया अखियां ने ...
 - दिन भागा वाला आया ए
 सतगुरां दे चरणां च, साड़ी सूरत समा जावे
 - गुरु मेरा उचा ए,
 खोल दिता भेद सारा, सब प्यार सुचा ए..
 - रोम—२ तो शुकराना है
 प्रभु तेरे प्यार दे नाल, जग बन गया मस्ताना ए...
 - साड़ी दुनिया रुखी ए
 यार नू वेखन लई, रुह रैन्दी भुखी ऐ....
 - मैनू प्रभु दा नशा चढ़या,
 उस रंग अगे सब फीका, मन मस्ती विच भरया ऐ।
 - वाली प्रेम नगर दा ऐ,
 संदेशा लैके नगरी—२ फिरदे हां....
 - सोणा साज बजादे हो,
 हर इक प्रेमी नू, हृदय नाल नांदे हो....
 - गुरु सबना नू जांदे ने
 पर सच्चे सतगुरु नू, कोई विरले पहचानदे ने.....
 - पोला मन ए भुलान वाला,
 तेरे बिना वडे साहिबा, केढा दस ए पहचान वाला,
 तेरा द्वारा वसदा रहे,
 सतगुरु गेरा प्यारा, संगता नाल हसदा रहे....
 - माला प्रेम दी या लईये
 गुरां दे द्वारे उने, असां
 साडे सिर देया साइयां वे
 साडे नाल प्यार पाके, मेहरां वरसाइयां ने

- दिती अमृत वाणी ए, मिली तेरी मेहर सदका,
 तेरी मेहरबानी ए....
 मेरा साहिव सजदा रहे— बनी रहे तेरी हस्ती,
 मैखाना वसदा रहे ...
 - तेरे नाम दी मैं पीवां, पी पी मस्त रहवां,
 संग तेरे मैं जीवां
 - तेरी होके खाँ गी मैं (सजना)
 तू वी मेरा हो गया, जग नू कहांगी मैं.....
 - तेरे रहग बहुतेरे ने,
 दर्श दिखा देवी, नई ते हुन बहुतेरे ने..
 - इस जिंदगी दा कि कहनां २
 जे दर्श न होया तेरा, फिर जिंदगी तो की लैना
 तू प्यार दा सागर ए, बृंद—२ भर—२ के,
 भर लई असां गागर ए.
 - हकीकत में हकीकत का यही तो दौर होता है
 यहां तो हर दौर में, हर दम नया दौर होता है
 - तेरे दरबार में स०, ये जनत झुकती है
 यहां पे सर झुकाने का मजा कोई ओर होता है
 सुन दिल दी गल मीता—२
 - तेरे विचो रब दिसदा, असां सजदा ताइयों किता
 आपे दुनिया पसारी ए — आपे ही वेखया पया,
 ए लीला न्यारी ए।



गल सुन मनवा मेरे, वे सतगुरु अंग संग तेरे
वे लाई चरणी तेरे, वे गल सुन मनवा मेरे

वे गुरु मेरे हीरे गोती, के उस थाह जगदी
ज्योति—२, वे दर्शन पांदे लोकी,
वे गल— —

वे गुरां दे दर ते जाइये, के चरणी शरीष
झुकाइये—२, वे रब नू सामने पाइये,
के गल— —

वे गुरां दिया उचियां थावां, के संगतां देन
दुवायां—२, वे गुरां दे द्वारे जावां,
के गल— —

वे गुरु मेरे अंतर्यामी, के सच्चे मन नाल
ध्याकी—२, वे गुरां दीयां मेहरा पावीं,
के गल— —

वे ओ थां करमा वाली, के जिथे संत पधारे—२
वे महिमा रब दियां गांवे, के गल सुन मनवा मेरे



जैसे राधा ने माला जपी श्याम की,
मैंने ओढ़ी चुनरिया तेरे नाम की,
तेरे नाम की ओ पीया, तेरे ही नाम की,
जैसे— —

प्रीत क्या जुड़ी, डोर क्या बंधी,
बिना जतन, बिना यतन, हो गई मैं नयी
बिना तोल की मैं बिकी, बिना दाम की— —
जैसे— —

क्या तरंग है, क्या उमंग है,
मोरे अंग—२ रचा, पी का रंग है,
शर्म आये कैसे कहूं, बात श्याम की— —
जैसे— —

पा लिया तुझे, पाई हर खुशी,
चाहू बार—२ चढ़ तेरी पालकी,
सुबह शाम की ये प्यास बड़े काम की— —
जैसे— —



जे इक तेरा प्यार, मेरे दिलदार, सावल यार
मैनू मिल जाये, मैं दुनिया तो की लेना—२

सारे छड़े सहारे तेरा दर लिया मल
तेरे बिना न गुजारा, मेरी सखी सुन गल
ये तेरा दरबार, ओ मेरे यार, मैनू मिल जाये,
मैं दुनिया तो की लेना—२

तेरे चंद जये गुखड़े तो वारी—२ जावां
तेरे चरणां विच सर रख, मैं मर जावां
ये तेरा दीदार, ओ मेरे यार, मैनू मिल जाये
मैं दुनिया तो की लेना——२——

मेरी अंत समय विच फड़ लई बांह—२
मेरी इस वृद्धावन विच थोड़ी जई थांह—२
ये तेरा उपकार, ओ मेरे यार,
मैनू मिल जाये,
मैं दुनिया तो की लेना——

ओ बांकेयार——



जब गम का गुवार दिल से निकला (मिटा)
तो मस्ती दिल में आने लगी
दूर हुआ फिर दुख का अंधेरा
इस घर में रोशनी आने लगी
झूम उठा फिर दिल ये मेरा
और लब पर हँसी सी आने लगी
दूर हुआ फिर दुख का अंधेरा,
इस घर में रोशनी आने लगी।

ये मस्ती की हालत छाई हुई है
हर दिल में खुशी समाई हुई है
देखा है जब से भ० को दिल में
हर जगह उसकी मूरत समाई हुई है

करता हूं प्यार सत० इसलिये
हर दिल में तुझको पाया हुआ है
हर दिल में तू समाया हुआ है

ये मस्ती की हालत छाई हुई है
हर जगह उसकी खुशबू समाई हुई है।

ॐ

५२

तेरे संग में रहेंगे ओ मोहना—२
तेरे संग—संग चलेंगे ओ मोहना—२
तुम दीपक बनो मैं बाती बनूं
ज्योति में मिलेंगे ओ मोहना— तेरे संग—

तुम चंदन बनो मैं पानी बनूं,
मस्तक पर मिलेंगे ओ मोहना— तेरे संग—

तुम मोती बनो मैं धागा बनूं
माला में मिलेंगे ओ मोहना— तेरे संग—

तुम मुरली बनो मैं तान बनूं—
अधरो पे मिलेंगे ओ मोहना— तेरे संग—

तुम वक्ता (ज्ञान) बनो मैं श्रोता (वाणी) बनूं—
सतसंग में मिलेंगे ओ मोहना— तेरे संग—

मैं गोपी बनूं तुम श्याम मेरे
रास रचेंगे ओ मोहना— तेरे संग

तुम ओम् बनो मैं सोहम् बनूं
आनन्द
तेरे बनके रहेंगे ओ मोहना— तेरे संग

ॐ

तू ही तू ही तू ही तू ही
साहिब मेरा, साहिब मेरा, साहिब मेरा, साहिब मेरा

तू सजन मेरा, तू प्रीतम मेरा—२
तू मेरा मीत, सखा हरि मेरा—२, तू—

तन मन मेरा, धन वी तेरा, २
तू ठाकुर स्वामी, तू प्रभु मेरा—२ तू—

तू मेरी ओट, तू मेरा सहारा—२
तू मेरी शोभा, तू मेरा प्यारा—२ तू—

तू मेरा दरिया, हम मीन तुम्हारो—२
तू मेरा ठाकुर, हम तेरे द्वारे—२ तू—

जहां देखूं तूम ही बसना—२
निर्णी नाम, जपे हर रसना—२ तू—

तू मेरा प्राण, प्राणाधार—२
तू मेरा जीवन, पालनहार—२ तू—

सिमर सिमर, सिमर सुख पांवा—२
आठ पहर तेरे गुण गावां—२ तू—



विना राम के तू किसी नाल प्यार न करी,
ओ मना याद रखी,
सोना छड़ के तू मिटटी दा व्यापार ना करीं,
ओ—

कोई मंदा बोल बोले, अगो बोली ना, हां बोली ना
देखी वंदा होके गंदगी फरोली न, हां फरोली ना
कोड़ी तकदीर नाल तकरार ना करी,
ओ मना याद रखी

जे तू नेड़े जाना चाहे भ० दे, हां भ० दे,
पंजा पैरियां नृ नेड़े वी ना आन दे, हां ना आन दे,
काग, क्रोध, लोभ, मोह ते अहं न करीं,
ओ मना—

मुङ के चौरासियां दे खाई ना, हो खाई ना,
यही वेला है सुनहरा चुक जाई ना, हा चुक जाई ना,
देखी अपने उद्धार दा उधार न करीं,
ओ मना—



राम दा जहाज मेरे गुरां ने बनाया है
आके टिकट कटा लो, जिन्हा पार उतरना—२

मिठे—२ वचन, वेदा दा सार है
नाम दी कमाई नाल होंदा बेढ़ा पार है
वचना ते अमल कर लो, जिन्हा पार उतरना—

जग तो निराला, गुरु ने बनाया है
अपनी रुहां नृ, दर ते बुलाया है,
सुंदर दर्शन पा लो, जिन्हा पार उतरना—

मुक्ति दे धन नाल, कर दे निहाल,
लोक परलोक विच, करदे साभाल,
गुरु नृ साथी बना लो, जिन्हा पार उतरना—

नाम दा रंग, जीव ते पान्दे ने
ब्रह्म ही है तू, इस नृ बता दे ने
सच्चा सौदा कर लो, जिन्हा पार उतरना—

जो संता दी शरणी आये,
बिछड़ी रुहां मेल कराये,
बिछड़ा राग मिलाये, जिन्हा पार उतरना—

कई जन्मा दे पुण्य होये,
तां संगता दा दर्शन होये,
संता दा संग बना लो, जिन्हा पार उतरना—



वैसे तो नशे अनेक हैं, ये नशा कुछ और है
साकी जो पिलाये इक बार जिसे, रहता सदा खुमार उसे,
वैसे—

जीवन में वही खुश रह सकता है
वचनों को जो अमल में लाता है
गुरु भक्त वही कहलाता है, निष्काम जो करके दिखाता है,
इक पल का अब तो भरोसा नहीं,
समय को ना यूँ ही गवाना है,
वैसे———

इस राह में आने वालों को,
अपनी ही लग्न की जरूरत है,
दुनियां की जिसको चाह नहीं,
जीते जी यहां तो मरना है,
अपनी ही खुदी को मिटाना है,
वैसे तो नशे—



रवा मेरेया ओ इश्क जगा दे जिंदी इंतहा न होवे
कोई ऐहो जई नमाज पढ़ा दे, कदी कदा न होवे

पढ़ना सुनना कसब है, जो ओर संवारे जीव
जिस पढ़ने से शौह मिले, ओ पढ़ना किसे नसीब, कोई

हद—२ करते सब गये, बेहद गया न कोच,
अनहद ही के नाद में, रहे कबीरा खोये—२, कोई—

आशिक ओही जेड़ा काफर थीवे, ला दिल ऐ कुफर कमावे
बाजों यार न मने दृजा, भाँवे खुद खुदा बन आवे, कोई—

आशिक पढ़न नमाज इश्क दी, जिस विच हरफ न कोई,
जीव न हिले, होठ न झापके, अल्लाह असल नमाज सोई, कोई—

अनहद दावा खून जिगर दा, आशिक मनिये सोई
तद माशूक इश्क वल वेखो, गल इश्क दी होई— कोई—

नमाजे इश्क दा पढ़ना, बड़ज़ दुश्वार होता है
जो आशिकों के सामने तलवार होता है
उठा खंजर, कटी गर्दन, नमाजी वो कहलाता है जिसे दीदार होता है।
कोई—

दिल की हसरत जुवां पे आने लगी
हर सूरत में उनकी सूरत नजर आने लगी,
खुदा के खास बंदे, ये जलवा देख लेते हैं,
रहो तुम लाख पदों में, पर वो देख लेते हैं, कोई—



श्वासो की माला पे सिमरूँ मैं पी का नाम
अपने मन की मैं जानूँ और पी के मन की राम

यही मेरी बंदगी है, यही मेरी पूजा
सांसो—

इक था साजिन मंदिर में
और इक था प्रीतम मस्जिद में,
सांसो—

प्रेम के रंग में ऐसी झूँझी
बन गया एक ही रूप
प्रेम की माला जपते—२ आप बनी मैं श्याम
सांसो—

हम और ना ही कुछ काम के
मतवारे पी के नाम के हरदम
सांसो—

प्रीतम का कुछ दोष नहीं है
वो तो है निर्दोष
अपने आप से बातें करके हो गई मैं बदनाम
सांसो—



हे गोपाल राधा कृष्ण गोविंद—२, कृष्णा गोविंद—२
हे

तुम बंसी बजाओ, नचाओ मुझे
पग घुघंरू न बांधू ये मुमकिन नहीं
आग तुमने लगाई मिलन की हरि—
बिना तेरे बुझाये ये तो मुमकिन नहीं
रंग दिया मुझे अपने रंग में मुझे सावरे,
रंग दूजा चढ़े, ये तो मुमकिन नहीं
बांगवा तुम मेरे, मैं तुम्हारी कली
फिर भी मैं न खिलूँ ये तो मुमकिन नहीं—२
हे

तुम्हें दे दूँ और दिल भी संभाले रहूँ
ऐसा कर पाऊंगी ये तो मुमकिन नहीं
फिर भी चिल्वन से तुम मुझको धायल करो,
मैं खुद को बचा लूँ, ये मुमकिन नहीं,
सामने तुम रहो, मैं निहारूँ तुम्हें, फिर भी प्यासी रहूँ, ये मुमकिन नहीं
तुम नैना से नैना मिलाये रहो,
मैं पलके गिरा दूँ ये मुमकिन नहीं
हे गोपाल—

ॐ

है प्रेम जगत में सार, और कोई सार नहीं,
तृ करले प्रभु से प्यार, और कोई प्यार नहीं —

कहा घनश्याम ने उधव को वृदावन तनिक जाना,
वहाँ की गोपियों को ज्ञान का कुछ तत्व समझाना,
विरद की वेदना में वे सदा वैचेन रहती हैं
तड़प कर आह भरकर और रो—२ यूं कहती हैं, है—

कहा उधव ने बढ़कर मैं अभी जाता हूं वृदावन
जरा देखूं कि कैसा है कठिन अनुराग का बंधन
हैं वो कैरी गोपियां जो ज्ञान बल को कम बताती हैं
निर्धक लोक लीला का सदा गुणगान गाती है—

चला मथुरा से कुछ दूर वृदावन निकट आया
वहीं से प्रेम ने अपना आप अनोखा रंग दिखलाया
उलझ कर वस्त्र कांटों में लगे उधव को समझाने
तुम्हारा ज्ञान परदा फाड़ देंगे प्रेम दीवाने, है—

वृक्ष झुक—२ कर यूं कहते थे इधर आओ—२
पपीहा कह रहा था पी कहाँ है ये तो बताओ
नदी यमुना की धारा शब्द हरि—२ का सुनाती थी
भंवर गुंजार से भी ये मधुर आवाज आती थी है—

गरज पहुंचा जहाँ यो गोपियों का जिस जगह मण्डल
वहाँ थी शांत पृथ्वी वायु धीमी ओम था निर्मल
सहव गोपियों के मध्य थी राधका रानी
सभी के मुख से रहकर निकलती थी यही वाणी है—

कहा उधव ने हंसकर मैं अभी मथुरा से आया हूं
सुनाता हूं सदेशा श्याम का जो साथ लाया हूं
जब कि आत्म सत्ता ही अलख निर्गुण कहलाती है
तो फिर क्यों गोह वश होकर व्यथ में जान जात है, है—

कहा राधा ने हंसकर तुम सदेशा खूब लाये हो,
मगर ये याद रखना, प्रेम की नगरी में आये हो,
संभालो योग की पूंजी, न हाथों से निकल जाये
कहीं विरह की अग्नि में ज्ञान की पोथी न जल जाये, है—

हो अद्वैत कायल तो फिर क्यों द्वैत लेते हो,
अरे खुद ब्रह्म होकर, ब्रह्म का उपदेश देते हो,
अगर निर्गुण हैं तुम हम तो कौन लेता है खबर किसकी
अलख हम तुम हैं तो कौन लखता है खबर किसकी है—

अभी तुम खुद नहीं, समझो कि किसको योग कहते हैं
सुनो इस तोर योगी द्वैत में अडेल रहते हैं
उधर राधा बनी मोहन, कन्हैया की जुदाई में
उधर मोहन बना राधा वियोगिन की जुदाई में, है—

सुनी जब अद्वैत की बातें खुली उधव की तब आंखे
पड़ी थी ज्ञान-मंद की धूल जिस में वो धूली
हुआ रोमांच तन में विंदू आंखों से निकल आया
पड़ श्री राधका पग पर कहा गुरु मंत्र यह पाया है प्रेम—

ॐ

अपना बना क तूने एहसान कर दिया है
ये तेरा शुक्रिया है—२

दुनिया है ऐसा सागर, जिसमें जहर भरा है,
नफरत को मिटाये, वो तेरा रास्ता है
तेरी रहमतों ने आके, हमको बचा लिया है
ये—

अपना बना——

मैं क्या थी क्या बनी हूं, औंकात मैं न भूलूं
तूने मुझे बनाया, ये बात मैं भूलूं
जो कुछ है पास मेरे, तूने ही सब दिया।
ये—

अपना बना——

अब इम्तहान ना लेना, ऐसी ही बकशी जाउं
बल दे दो सतगुरु इतना, तेरा प्रेम मैं निभाउं
तेरी रहमतों का सागर, मैंने सदा पिया है।
ये—

अपना बना के——

ॐ

अरे लोगों तुम्हें क्या है
या वो जाने या मैं जानूं,

वो दिल मांगे तो हाजिर है,
वो सिर मांगे तो बेसिर हूं
वो मुख मोड़े तो काफिर हूं
या वो जाने——

वो मेरी बगल छिप रहता,
वो मेरे नाज सब सहता,
वो दो बातें मुझे कहता
या वो जाने——

वो मेरे खून का प्यासा,
मैं उसके दर्द का मारा,
दोनों का पथ है निराला,
या वो जाने——



इस जन्म का यही सारांश है
तू तो शिवा शिव है, २ तू तो शिवांश है

वो मेरा है, ये मेरा है
इस मिथ्या ने मन को धेरा है
इस सत्य को तू जान ले, पहचान ले
तू तो शिवा शिव है, तू तो शिवांश है

प्रश्न भी तू और उत्तर भी तू है
पवन में खुशबू को किसने रोका है
इस सत्य को तू जान ले, पहचान ले
तू तो शिवा शिव है—

जीवन बस इक सपना है
जब तन को माटी होना है
इस सत्य को तू जान ले, पहचान ले
तू तो शिवा—



“इश्क — इश्क — इश्क — इश्क”
ये इश्क की आग लगाते हैं
मुस्करा कर विजली गिराते हैं,
नजर मिला कर क्यामत ढाते हैं,

अब मेरा भी जी करता है, डूबकर मर जाऊं
इस तूफान में,

पहले रव दा पता पुछ कर पछताई हाँ
हुण कहांदी हाँ रव सानू यार मिलया
यार कि मिलया, रव भी अपना हो गया

इश्क तोहम्द है, इश्क सौगात है
इश्क को कबूल, हर वात है

इश्क वरदान भी है, खुदा मेहरबान भी है
इश्क मशहूर है पर आशिक बेकसूर है

इश्क खुदा की पहचान है
इश्क दिवानों के दिल की जान है

तेरा इश्क मेरी चाहत है
तेरे प्रेम में इस चाहत में राहत है

आशिक इश्क के बिना जी नहीं सकता
दर्द इश्क का पीकर वो सी नहीं करता

झलक यार दी पाकर खिल जांदा है
फिर अंदरो—२ मुस्करादां है, सदके यार दे—२

जिसने इश्क नू पीता, मीठा—२ सर्व विच जिंदा—



ऐसी पोशाक मेरे यार ने पहनाई है—
जर्रे—२ में तेरी शक्ल नजर आई है—२
मैं बार—२ यही सोचता हूँ रह रह कर
मैं क्या थ और मुझे क्या बना दिया तुमने। ऐसी—

ये क्या सिखा दिया है, तुमने मेरी नजर को
सजदा कर दिया, तुमने मेरी नजर को
पहले तो चूमता था, पर्टे को मैं नजर से
अब चूमने लगा है, ये पर्दा मेरी नजर को। ऐसी—

दिल में, जिगर में आंख में बस तृ ही तृ रहे
इसके सिवा न और कोई आरजू रहे
मेरा सनम हमेशा मेरे रूह बरू रहे
जन्नत है मेरी रूह को तूने जो बकश दी
गेरे दिल में ऐ खुदा बस तृ ही तृ रहे। ऐसी—

गैर मुमकिन है तेरा मुझसे अलग हो जाना
तेरी तस्वीर मेरे दिल मे उतर गई है। ऐसी—

कौन सा काम तेरे जात ने पूरा न किया
तेरी नसीयत मेरे — हर हाल में काम आई है। ऐसी—

दुनिया सलाम करती है, हैरत की बात है
मैं कुछ भी नहीं, सब तेरी रहमत की बात है। ऐसी—



ऐ सनम तृ मेरी जान ही जान है—
तृ ही यार मेरा, तृ ही भ० है—२

कोई शाहकार नहीं, शाहकार से बढ़कर,
किसी का यार नहीं, मेरे यार से बढ़कर, ऐ—

जैसे है लगता चांद सितारों में एक है—२
वैसे हमारा पीहूं, दुनिया में एक है—२ ऐ—

तुझे क्यों न पूजूं, तुझे क्यों न चाहूं
मेरे मन के मंदिर का तृ देवता है—२ ऐ—

तेरे दर पे सजदा है किया, तुझे अपना काबा बना लिया
ये गुनाह है तो हुआ करे, मुझे इस गुनाह पे नाज है, ऐ—

तृ मिला तो गिला, राहें हक दा पता
मेरा सब कुछ सनम, तुझपे कुर्बानि है—२, ऐ—

देखकर उनको हम, देखते रह गये—२
रहे महबूब तृ, मेरा ईमान है—२
तुझसे पहले मुझे जानता कौन था—२
तेरी रहमत से ही खुद की पहचान है—२



चारों पासे सुख होवे, किसे नू न दुख होवे,
तृ आवीं बाबा नानका, ऐ हो जईयां

ऐहो जइयां खुशियां ले आई बाबा नानका—२

जिदे घर छांव हो नहीं, उस घर तेरा रूख होवे
तार—२ जुड़ी रहे, न ही भुल चुक होवे
चारें पासे ठंड बरसाई बाबा नानका, ऐहो——

किसे घर विच बाबा, कोई न कलेश होवे
सब घर विच तेरी पूजा ही हमेशा होवे
ऐहो जया रस्ता विखाई बाबा नानका, ऐहो——

माला तेरे नाम वाली सबना ने फड़ी होवे,
मीरा वांगू मस्ती वी, सबनी नू चढ़ी होवे,
ऐहो जयी कोई कला वी, वखाई बाबा नानका, ऐहो——

तेरे चरणां ते दाता, हर कोई करीब होवे
ऐसा ना कोई होवे जिनू प्यार न नसीब होवे,
सबनां दी झोली भर जाई बाबा नानका, ऐहो——



इक राधा, इक मीरा, दोनों ने श्याम को चाहा
अंतर क्या दोनों की चाह में बोलो
एक प्रेम दीवानी, एक दरस दीवानी, एक——

राधा ने मधुवन में ढूँढा
मीरा ने मन में पाया
राधा जिसे खो वैठी वो गोविंद
मीरा हाथ दिखाया
इक गुरली, इक पायल, इक पगली, एक घायल
अंतर क्या दोनों की प्रीत में बोलो
इक सूरत लुभानी, इक मूरत न लुभानी
एक प्रेम दीवानी, एक दरस दीवानी——

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर
राधा के मनमोहन
राधा नित श्रृंगार करे
और मीरा बन गई जोगन
इक रानी, इक दासी, दोनों हरि प्रेम की प्यासी,
अंतर क्या दोनों की तृप्ति में बोलो,
इक जीत न मानी, इक हार न मानी,
एक प्रेम दीवानी, एक दरस दीवानी——
इक——

करता के हाथ हाता तू काहे को करनी चाला
होगा वही जो रुचा गन मान काहे करने चाला

(1) बान्धा है दंगे विचलन, बात और काहे किसलोग
बाजी बहुप्रेर है उसकी बाला तू काहे को करने चाला
करता के हाथ-

(2) माटी रोपी तज को रचाया
फाण जो दाले से जीवन जीव
दाह जोड़ और ताँड़ वही तू काहे को राखने चाला
करता के हाथ हाता-

(3) दोन है बारा इक चाला का
खेगा लाई को छाले का छवलाता (वो ही)
जोड़ जो बुतकु किरी को रुला
तू काहे देने चाला

(4) कठपुत्री का रेला है बारा
कठपुत्री दीर्घ भान नाचा॥
चले तुम्ही जो भैरी भदा
तू काहे को भोचे भला
करता के हाथ हाता-

(5) जो है बारा इक परल्ला
तू ही हू है और कुछ नाही
मै भैरी जो अन्ही है रुला
तू किसकी रक्षा मै चाला
करता के हाथ हाता, तू काहे को करनी चाला
होगा वही जो रुचा गन मान काहे करने चाला



दिन होवे रात होवे तेरा जिक करां मै,
तेरे होंदेयां वे मेरे साइयां कानू फिकर करा मै,
बिन मंगया तृ दीता सानू हक तो वे ज्यादा
यारं बचना द साईयां तृ निभाया हर बादा,
तेरी रजा विच राजी हर वेले हुन रहना
सुख होवे दुख होवे मुहों कुछ नइयों कहना
सुख विच शुकराना दुख विच फरियादां हर हाल विच
दाना बस तेरी रये यादां, ऐना देता तृ रब्बा कीवीं जिक करां मै
हर दम हर वेले साइयां तेरा शुकर करां मै
किना लफजां गावा महिमा मै तेरीयां दानां
हर हाल विच निभाया तुसा माडे नाल नाना,
वाहां फङ्के हमेशा चंगे पासे बल पूरा राहा दिखाया
असी अधे ते अधेरे तृ है पूरण ते पूरा
गल साहिल दी तृसा इक बार ना टाली ताइयों हर कोई होया साईयां
तेरे दर दा सवाली

साइयां वे शुकर करा मै जिस हाल विच रखे, साईयां तेरा शुक्र करा
कि मैं
तेरा शुकर करां वे साईयां तेरा शुकर करां-२-२
तुसां लगियां तोड निभाइयां तेरा शुकर करां, तेरा शुकर करा वे साइयां
तेरा शुकर करां

तेरा शुकर करां वे साईयां मैं तेरा शुकर करां-२-२-२-२
दरवार बुलाया शुकर करां
दोषानुभुलाया शुकर करां
अंहकार मिटाया शुकर करां
देके ना जताया शुकर करां
तेरा शुकर करा वे साइयां मैं तेरा शुकर करां-२

दरणां विच लाया शुकर करां
आपे अपनाया शुकर करां
धीरज उपजाया शुकर करां
सानू पार लगाया,
दिन रात बतेरा शुकर करां
जद होवे अंधेरा शुकर करां
सुख-दुख सब तेरा शुकर करां
कण कण विच तेरा शुकर करां

पल-२ मैं तेरा शुकर करां
जद होवे सवेरा शुकर करां
कुछ वी नई मेरा शुकर करा
जिस दां वसेगा

तेरा शुकर करां वे साइयां मैं तेरा शुकर करां—२
 मैं देने सवाली शुकर करां
 दुनिया दा वाली शुकर करां
 मोड़े ना भाली शुकर करां
 बंडे खुशहाली शुकर करां
 तेरा शुकर करां वे साइयां मैं तेरा शुकर करां—२
 दुखिया दा सहारा शुकर करां
 जद—जद दिल हारा शुकर करां
 संसारे ये सारा शुकर करां
 शिरडी दा नजारा शुकर करां
 तेरा शुकर करा वे साइयां मैं तेरा शुकर करां—२
 संगता दे कारज आप खलौया—२, हर कम करावन आया राम,
 संगता दे कारज आप खलोता—२
 सतगुर सुख दायी शुकर करां
 तूसा देर ना लायी शुकर करां
 किस्मत चमकाई शुकर करां
 इज्जत वी भाई शुकर करां
 तेरा शुकर करा वे साइयां मैं तेरा शुकर करां,
 हर आस अधूरी शुकर करां,
 श्रद्धा ते सबूरी शुकर करां
 रखदा नई दूरी शुकर करां
 हर वक्त हजूरी शुकर करां
 तेरा शुकर करां वे साइयां मैं तेरा शुकर करां—२
 मंगया सो पाया शुकर करां
 वदियां तो बचाया शुकर करां,
 सम्मान वधाया शुकर करां
 समझा ना पराया शुकर करां
 तेरा शुकर करां वे साइयां मैं तेरा शुकर करां—२
 चंगया नू मिलाया शुकर करां
 विश्वास जगाया शुकर करां
 हर कम्म बढ़ाया शुकर करां
 अशकां दा सहारा शुकर करां

रूतबा तेरा आली शुकर करां
 तेरी शान निराली शुकर करां
 कर जगदावाली शुकर करां
 झूबदें तू सभाली

सुखियां नू वीं प्यारा शुकर करां
 तेनू ही पुकारा शुकर करां
 दिल जान वेहारा शुकर करां
 स्वर्गा तू वी प्यारा

कीत्ती सुनवाई शुकर करां
 हर पीड़ि मुकायी शुकर करां
 औकात बनाई शुकर करां
 झोली विच पायी

कि थी इक दूरी शुकर करां
 देना ऐ जरूरी शुकर करां
 कट दा मजबूरी शुकर करां
 की थी मंजूरी

लारा नहीं लाया शुकर करां
 नेकी बल लाया शुकर करां
 रज—रज के रजाया शुकर करां
 हर वचन निभाया,

मेहनत दा खवाया शुकर करां
 धन धन तेरी माया शुकर करां
 झुकना वी सिखाया शुकर करां
 कीवे फल पाया

तेरा शुकर करां वे साइयां मैं तेरा शुकर करा—२

सतगुरु प्यारा मेरे नाल है

तेरा शुकर करा वें साइया मैं तेरा शुकर करां—२

हर रसना ते साई—२

हर सुख विच वी साई—२

चरें पासे साई—२

कण—कण विच वी साई—२

मिल के बोलो साई—२

सच दी सूरत साई—२

चिंता कजिये साई—२

परदे कजदा साई—२

बांह फड़ लैंदा साई—२

अनमोल रतन साई—२

हरदम रक्षक साई—२

जग तो न्यारा साई—२

खुशियां स्वर साई—२

भक्ति दे दां साई—२

मस्ती दें दां साई—२

चुकैया दां वे साई—२

दुखियां दां वीं साई—२

सब रुह वेखे साई—२

दुख दर्द हरे साई—२

नित्य ध्यान करो साई—२

एहसास करो साई—२

तेरा शुकर करां वे साइयां मैं तेरा शुकर करां—२

तुसां लगिया तोड़ निभाइयां मैं तेरा शुकर करां वे साइयां मैं तेरा शुकर

करां।



यारां ओ यारां, यारां ओ यारां, इशक ने मारा
हो गया मैं तो तुझमें तमाम, दे रहे सब मुझे तेरा नाम
मैं बेनाम हो गया — २

तेरी अदायी तेरा ही जलवा, कैसे ये कलियां कैसी बहार
अब दिल तो मेरा तेरा नगर है, ये मेरी अखियां हैं तेरा द्वार
अब मैं कहां हूं सब तू ही तू है, मेरा मन, मेरा तन, मेरा नाम
मैं बेनाम हो गया — २

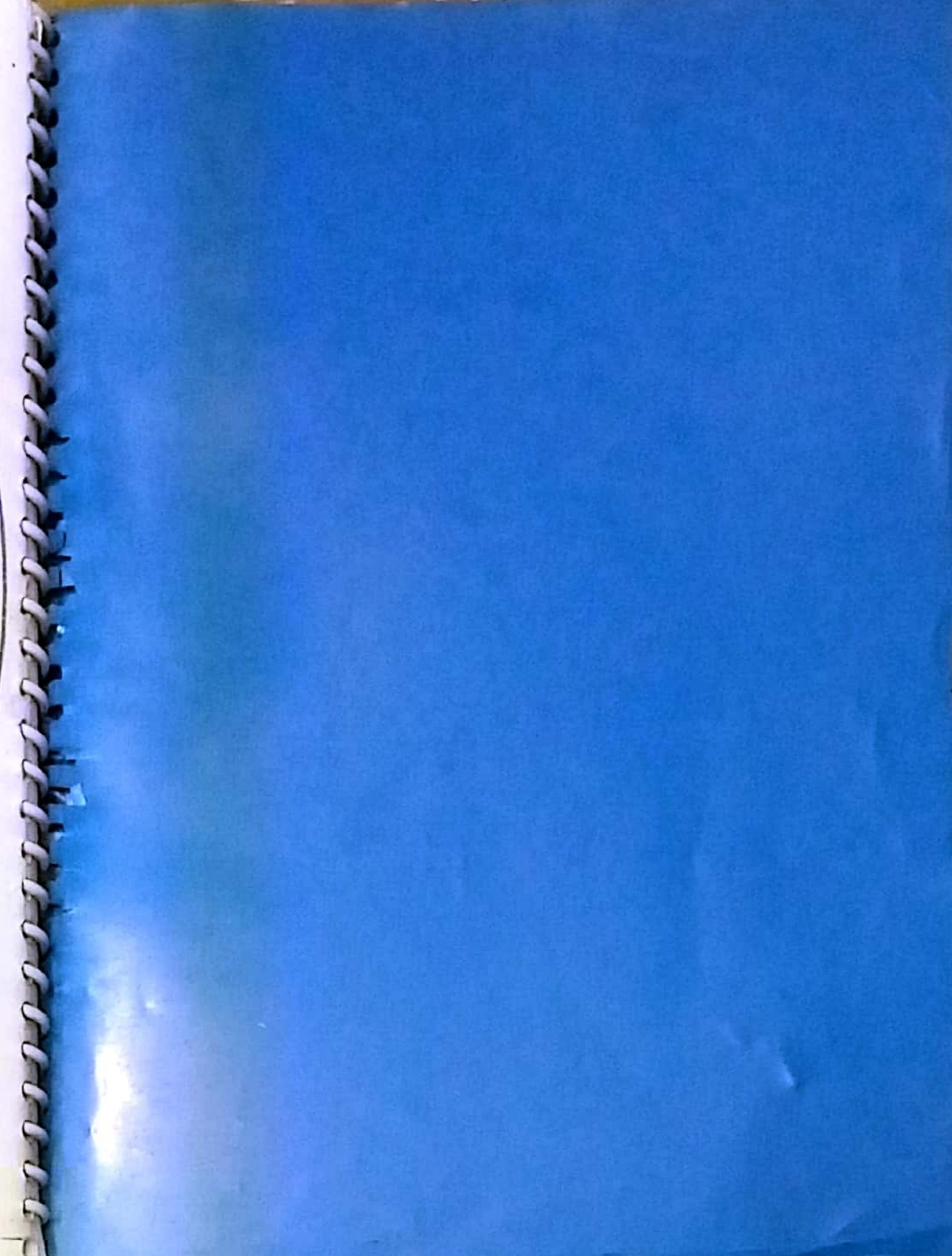
काजल धूल जाये आंसू से, और रंग धूले पानी से
रंग चढ़ाया मैंने मिलकर उस दिलबर जानी से
सूरत मेरी रूप है उसका, बन गया बन गया मेरा काम
मैं बेनाम हो गया — २

ॐ

निराकार देया सजया सवारेया—२
 के तेरे विचो खब बोलदा
 रज लेंदिया ने अखियां प्यासियां—२
 जदो दा ऐदा भेद खोलया नि०—
 खब—२ करदी मैं खब हो गई—
 तेरे नाल सोडा होर चंद नहीं सजना
 कोई तेरे तो वखरा पसंद नहियों सजना
 खब बिट—२ तकदा है तेनूं, जदो दा ऐदा भेद खोलया—२ नि०
 दिल दी खितार उते गीत तेरा वजदा
 सारी कायनात तेरा करदी ए सजदा
 हो आ जांदियां ने हवा नू करेलियां,
 जदो दा सनो सच बोलदा—२ नि०
 जमाने दी जमी मेरा भार नहियों सहारदी
 फिर वी ऐ मेहर तेरी दुनियां नू तार दी
 ओ हार जांदियां ने तुफां दिया ताकतां
 तेरा नहियों बजूद डोलदा—२ नि०
 खब खब करदी मैं खब हो गई
 तेरे प्यार दे रंग विच खो गई
 तेरे रंग विच सुध बुद्ध खो गई,
 सुध बुद्ध खो गई शुद्ध बुद्ध हो गई,
 सुध बुद्ध खोकर कमली हो गई
 तेरे प्यार विच सब कुछ खो गई,
 लोकी कैहदें कमली हो गई,
 सारी सुध बुध मैनूं भुल गई— जदो दा तेरा लड़ फड़वा
 नि० दैया —————

ॐ

जब मेरी तेरी इनायत पर नजर जाती है
 मेरे अल्लाह मेरी आंख भर आती है
 बेसबव गुङ्गाको दिये जाता है देने वाला —२
 हाथ उठने नहीं झोली भर जाती है
 तू मेरे रूबरू है —२
 मेरी आंखों की इबादत है
 तू मेरे रूबरू है, मेरी आंखों की इबादत है
 ये जमीन है गोहब्बत की यहां मना है खता करना
 सिर्फ सजदे में गिराना है और अद्व से दुआ करना
 तू मेरे रूबरू है, मेरी आंखों की इबादत है तू मेरे रूबरू है
 तू मेरे रूबरू है, मेरी आंखों की इबादत है
 बस इतनी इजाजत दे, कदमों पे जबी खब दू—२
 फिर सिर ना उठे मेरा यह जान भी यहीं खब दू
 इस बार तो दीदार दे, मेरे सामने रह के भी तू
 ओझल है तू बोशीदा है, मेरे हाल से हबीबा है
 बस इतनी इजाजत दे, कदमों पे जबी खब दू—२
 फिर सिर ना उठे मेरा यह जान भी वहीं खब दू
 रूबरू पीया रूबरू पीया —६
 एक मासूम सी दिल की ताजाबीज है इश्क में जान दे दे बड़ी चीज है
 दीवाना बना अपना दीवानगी यूं भी है —२
 पैरों में पड़ी गर्दिश और सिर में जनून भी है
 इस बार तो दीदार दे —२
 जान सौंप दे, जान बार दे, इस बार तो दीदार दे
 अगर तू नहीं ये जिंदगी कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं
 ये बंदगी कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं
 ये जिंदगी कुछ भी नहीं, ये बंदगी कुछ भी नहीं,
 ये बंदगी कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं
 ये बंदगी, ये बंदीगी, ये बंदगी, कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं
 दीवाना बना अपना दीवानगी यूं भी है
 पैरों में पड़ी गर्दिश और सर में जनून भी है
 तू मेरे रूबरू है, मेरी आंखों की इबादत है।



मेरा बैशी मैं मुझा
मुझे ना कोई भारे..

ॐ

Date: 1.3.2011
Page No. 1 Friday

प्रक्षणानी बहुत गहरा है, उसकी जा नहीं पा सकते।

भ० ने कहा - इष्टज्ञान का अंगारा सबके अंदर पड़ा है।
मैं ऐसे, इर-जिहाव से एक भया है। युक्, उस वास्तव
को हिलाता रहता है और अग्रि चुन्नवतित हो जाती
है। सूना सकना कोई नहीं -। तुम इतने दूरा हो जाओ
कि तुम्हारा रंग बाब पर चढ़ि, किसी का रंग तुम्हारे
ऊपर न चढ़े। गृहस्थ ऐसे ही जान की शुद्धजात होनी
है। जो घर-गृहस्थी ऐसे भयदा नहीं करेगा, वो युक्
की, निः की, क्या भयदा करेगा। घर में युक् के, मर
के, भिट कर भलेंगे। अपने जिस कुद नहीं करोये ऐसा किमी
नहीं चाहेंगे। मौन हो जाएंगे, निश्चद हो जाएंगे।
प्राप्ति कर : करके अपने निः को नजदीक लाओ। अरु
दू ही तो आया है, हर क्षम में दू ही तो आया है।
भ० को बुलाएंगे तो भ० आ जाएगा। जात-क्रादी हमारी
भ० वाली हो जाएगी। यह जाते हैं संसार वालों की तरफ,
तो हम संसारी हो जाए। जिलता कुद भी नहीं। पुकृति
से समता आव है। आवना बक, जैकी ही बखनी है - क्योंदि
बुरा नहीं भले मन के पास हो। जिस बात से छूटना चाहते
हो - पुकारो निः को - भ०। मुझे इस बात से छुड़ा दे।
हम छूटना नहीं चाहते तो हमारी उचार में बतनी तीव्रता नहीं
होती। पुकारेंगे तो छूट जाएंगे। हम दो नाव में पाव
रखना चाहते हैं तो कहीं पहुँचेंगे नहीं। यह ही आव रखें।
निः से गहरी तार होगी तो शरीर का आँग कुट जाएगा।
देह ही नहीं रहेगी तो मैं - मेरा, नामन्य, निंदा-चुम्ली कहों
रहेगी। सारी निशाकारीय बालि हमारे तन में उकट हो जाएगी।
इसना भ० को आगे रखे कि हम फैदे होते पाए और बो-